भारत कीं कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

केंद्रीय कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

30 अगस्त 2022

पाण्डु नरोटी की मौत को कडी से कडी निंदा करे!

26 अगस्त 2022 को नागपुर जेल मे पाण्डु नरोटी की मृत्य स्पष्ट रूप से ब्राम्हणीय हिन्दुत्वा फासीवादी बिजेपी मोदी–अमीत शाह की गुट की क्रूरता और अमानवीयता को विस्तारित करता हैं। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी इस हत्या को उग्रतापुर्वक निंदा करती हैं। पाण्डु नरोटी गढ़चिरोली के आदिवासी गॉव की निवासी हैं जिन्हे पांच अन्य लोगो कें साथ जिस मे जी.एन. सायबाबा भी शामिल हैं, एक फर्जी मामले में गिरफतार किया गया।

मानवाधिकार संगठनों कई सालो से इस फर्जी मामले और सजा के खिलाफ निरंतर लड़ाई लड़ रही है। प्रोफेसर जी.एन सायबाबा की अवस्था से हम सब जागरूक हैं। उन की स्वास्थ्य दिन पर दिन बिगड़ती चली जा रही हैं और उन्ही कें मामले में सजा काट रहे पाण्डु नरोटी स्वाइन फ्लू जैसे घातक बीमारी के चलते मारे गए। साफ तोर से यह एक खुली आम हत्या हैं, एक मनुष्य की जिसकी गलती थी की वह जन्म से आदिवासी हैं और इस मृत्य संविधानिक लोकतंत्र को घोर उल्लंघन है।

राज्य प्रशासन की अमानवीय व्यवहार साफ तौर से समझा जा सकता हैं की जब उनके परिवार के सदस्य ने जेल के अधिकारीयों ने मृत्य से पहले पत्र लिखा तो जेल के आधिकारीयों ने उनके स्वास्थ्य की जानकारी नही दी। पाण्डु नरोटी की बिगड़ती स्वास्थ्य को देखते हुए, उनके वकील ने न्यायालय का दरवाजा खटखटाया और यह तक की ड़ॉक्टर का भी निर्देश था की उन्हे अच्छे आस्पताल में इलाज किया जाए पर कोई लाभ नंही। उन्हे उचित इलाज नही दिया गया। जबकी भारत के संविधान में स्वास्थ्य एक मौलिक अधिकार हैं।

पाण्डु नरोटी के परिवार के सदस्य को उनकी मौत की खबर अखबार के द्वारा प्राप्त होती हैं। उनके वकील आकाश सरोटे को भी नही सूचना दी गयी। यह याद रखना जरूरी है की फादर स्टैन स्वामी को सरल स्ट्रा देने से वंचित किया गया, जो पार्किनसन्स बिमारी में जरूरी साबित होता हैं। कामरेड किरण को मुंबई जेल में सूचना मिलती है की, जो उच्च चरण कैंसर बिमारी से होस्पाइस मे उनकी जीवनसाथी कामरेड़ नर्मदा आखरी चरण पर है। इस पिरिस्थिति में भी कामरेड़ किरण को उनसे मिलने की अनुमति नही दी गयी। जब उनकी मृत्यु हो गई तब कामरेड़ किरण को मृत शरीर देखने को ले जाया गया। वह दोनो दण्डकारण्य मे राज्य स्तर के नेता थे जो 2019 जुन में गिरफ्तार हो गए थे।

इस देश में न्यायालय, उन सारे कानून जो लोकतांत्रिक और मौलिक अधिकारों से तालूब रखती है उन सब पर प्रश्न उठता हैं। यह एक महत्वपुर्ण समय है, जब हर नागरिक इस अमानवीय व्यवहार की विरोध प्रकट करें। पिछले साल ही फादर स्टैन स्वामी और इस साल पॉडु नरोटी की मृत्य हो गई। यह समय की माग हैं की हमे जी.एन सायबाबा जो अपनी स्वास्थ्य से लड़ रहे है, उन्हे इस परिस्थिति से बचाना होगा।

इस संदर्भ में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी तमाम उत्पीड़ित वर्गो, तबकाओं, लौकतांत्रीक और सामाजिक कार्यकर्ताओं, क्रांतिकारी और आदिवासी संगठनों को देश के जेलो में बंद कैदी की गंभीर परिस्थिति को लेकर आवाज उठाने की आह्वान देती है। और इस मामले को 13 सितंबर से 19 सितंबर तक होने वाले एक्षन वीक जो आइसीएसपीडबल्यू ने आह्वान दिया है उसमें गंभिरता से रखे।

अभय
प्रवक्ता
केंद्रीय कमेटी